

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

बाकू के 'NCQG' परिणाम पर विचार

www.nextias.com

बाकू के 'NCQG परिणाम' पर विचार

सन्दर्भ

- हाल ही में बाकू, अजरबैजान में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP29) महत्वपूर्ण किन्तु विवादास्पद परिणामों के साथ संपन्न हुआ, विशेष रूप से जलवायु वित्त के लिए नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) के संबंध में।

पृष्ठभूमि

- जलवायु वित्त की अवधारणा इस मान्यता से उभरी है कि विकासशील देश, वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में सबसे कम योगदान देने के बावजूद, जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित होते हैं।
- जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) ने वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर सीमित करने के लिए महत्वपूर्ण रूप से मजबूत प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है, जिसे जलवायु परिवर्तन के लिए वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करने के लिए 2015 में अपनाया गया था।
- लक्ष्य एक नया वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करना है जो विकासशील देशों की उभरती जरूरतों और प्राथमिकताओं को दर्शाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके पास अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs), राष्ट्रीय अनुकूलन योजनाओं तथा अन्य जलवायु-संबंधी पहलों को लागू करने के लिए आवश्यक संसाधन हैं।
- वर्तमान नीतियों को, यदि वैश्विक स्तर पर जारी रखा जाता है, तो 3.1 डिग्री सेल्सियस तक तापमान वृद्धि होने की उम्मीद है।

NCQG के मुख्य उद्देश्य

- विकासशील देशों को सशक्त बनाना:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में सबसे कम योगदान देने के बावजूद विकासशील देश प्रायः जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।
 - इसका उद्देश्य इन देशों को स्वच्छ ऊर्जा, अनुकूलन उपायों और जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करने के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
- जलवायु कार्रवाई में तेजी लाना:** जलवायु परिवर्तन के प्रभावी शमन और अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है।
 - NCQG को विकासशील देशों के लिए पेरिस समझौते के लक्ष्यों के अनुरूप महत्वाकांक्षी जलवायु कार्रवाई योजनाओं को लागू करने के लिए आवश्यक निधियों को अनलॉक करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- न्यायपूर्ण संक्रमण को बढ़ावा देना:** NCQG कम कार्बन और जलवायु-लचीली अर्थव्यवस्था में न्यायपूर्ण संक्रमण का समर्थन करता है, जिससे कमज़ोर समुदायों की रक्षा करते हुए नए रोजगार और अवसर सृजित होते हैं।
- वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना:** NCQG को प्राप्त करने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना तथा जलवायु परिवर्तन के लिए वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करना आवश्यक है।

NCQG और इसका महत्व

- वित्त, विशेष रूप से विकासशील देशों में स्वच्छ विकल्पों को अपनाने में तेजी लाने में एक महत्वपूर्ण घटक है।

- NCQG को पिछले जलवायु वित्त प्रतिज्ञाओं की कमियों को दूर करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जिसमें 2010 में कैनकन में की गई \$100 बिलियन की वार्षिक प्रतिबद्धता भी शामिल है।
- इसका उद्देश्य विकासशील देशों का समर्थन करने के लिए 2025 के बाद स्पष्ट, अधिक जवाबदेह जलवायु वित्त लक्ष्य स्थापित करना है।

COP29 के परिणाम

- COP29, जिसे 'वित्त COP' के नाम से जाना जाता है, से NCQG पर एक महत्वाकांक्षी परिणाम देने की उम्मीद थी।
- सम्मेलन न्यायसंगत बोझ-साझाकरण और जलवायु न्याय के सिद्धांतों के साथ सामंजस्य बिठाने में विफल रहा, वैश्विक दक्षिण की वित्तीय जरूरतों को नजरअंदाज कर दिया।
- यह उस मूल भावना को कमजोर करता है जिसके लिए NCQG की स्थापना की गई थी।

चिंताएँ और चुनौतियाँ

- **वित्तीय लक्ष्यों पर असहमति:** राष्ट्रों में इस बात पर मतभेद है कि कितनी धनराशि एकत्रित की जानी चाहिए।
 - विकासशील देश अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसे उच्च आय वाले देशों से अधिक योगदान की मांग कर रहे हैं।
- **समानता और जिम्मेदारी:** साझा लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियों और संबंधित क्षमताओं (CBDR-RC) का सिद्धांत एक विवादास्पद मुद्दा है।
 - विकासशील देशों का तर्क है कि विकसित देशों को अपने ऐतिहासिक उत्सर्जन के कारण वित्तीय भार का बड़ा हिस्सा उठाना चाहिए।
- **वित्त के प्रकार:** इस बात पर परिचर्चा चल रही है कि NCQG में किस प्रकार के वित्त को शामिल किया जाना चाहिए।
 - इसमें यह शामिल है कि क्या निजी वित्त को लक्ष्य के लिए गिना जाना चाहिए और यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि निधियाँ वर्तमान प्रतिबद्धताओं से पुनर्प्रयोजन के बजाय नई और अतिरिक्त हों।
- **आवंटन और उपयोग:** यह निर्धारित करना कि निधियों का उपयोग किस लिए किया जाना चाहिए, एक चुनौती है।
 - शमन और अनुकूलन प्रयासों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है, जिसमें विकासशील देश अनुकूलन वित्त के महत्व पर जोर देते हैं।
- **NCQG परिणाम:** लक्ष्य \$300 बिलियन प्रतिवर्ष (2025-2035), जिसकी आलोचना प्रतिवर्ष आवश्यक \$1.3 ट्रिलियन की तुलना में अपर्याप्त होने के लिए की जाती है।
 - विकासशील देशों के लिए जोखिम उत्पन्न करता है, जो ऋण के बजाय पूर्वानुमानित सार्वजनिक अनुदान को प्राथमिकता देते हैं।
- **कार्यान्वयन बाधाएँ:** विकासशील देशों को पूंजी की उच्च लागत, सीमित राजकोषीय स्थान और ऋणग्रस्तता के उच्च स्तर जैसी विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो जलवायु वित्त के प्रभावी उपयोग को जटिल बनाते हैं।
- **निगरानी और जवाबदेही:** धन के संवितरण और उपयोग में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।
 - वित्तीय प्रवाह को सही तरीके से ट्रैक करने और रिपोर्ट करने के तरीके के बारे में चिंताएँ हैं।

अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वित्त पर भारत का दृष्टिकोण

- COP29 में, भारत ने विकसित देशों से अपनी वित्तीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने और 2030 तक वार्षिक कम से कम 1.3 ट्रिलियन डॉलर प्रदान करने की आवश्यकता दोहराई।
- यह मांग 'साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (CBDR)' के सिद्धांत पर आधारित है, जो जलवायु परिवर्तन में देशों की अलग-अलग क्षमताओं और योगदान को मान्यता देता है।
- भारत ने अन्य विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त में भी योगदान दिया है, जो वैश्विक जलवायु कार्रवाई के प्रति अपनी एकजुटता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- हालाँकि, भारत में अंतर्राष्ट्रीय हरित वित्त का प्रवाह अपने महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए धीमा और अपर्याप्त बना हुआ है।

भारत की घरेलू पहल और नीतियाँ

- केंद्रीय बजट 2024-25 में जलवायु वित्त वर्गीकरण की शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य जलवायु कार्रवाई में निवेश को प्रोत्साहित करना और ग्रीनवाशिंग को रोकना है।
- 2024-25 में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय को ₹19,100 करोड़ आवंटित किए गए।
- FAME चरण-II के तहत ₹5,790 करोड़ जैसी सब्सिडी इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देती है।
- भारत का लक्ष्य 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना है और उसने अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ाने में पहले ही महत्वपूर्ण प्रगति कर ली है।
- अक्टूबर 2023 तक, गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा स्रोत भारत की कुल स्थापित बिजली क्षमता का 43.81% हिस्सा थे।

निष्कर्ष और आगे की राह

- COP29 से NCQG परिणाम अपर्याप्त महत्वाकांक्षा को दर्शाता है और न्यायसंगत बोझ-साझाकरण एवं जलवायु न्याय के सिद्धांतों को कमजोर करता है।
- यह वैश्विक दक्षिण की वित्तीय जरूरतों को संबोधित करने में विफल रहता है, जो परिवर्तनकारी जलवायु कार्रवाई को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।
- जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अधिक स्पष्ट होते जाते हैं, भविष्य की जलवायु वार्ताओं के लिए विकासशील देशों को एक स्थायी भविष्य की ओर संक्रमण में समर्थन देने के लिए न्यायसंगत और न्यायसंगत वित्तीय तंत्रों को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है।

Source: TH



दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. क्या आप मानते हैं कि जलवायु वित्त के लिए नव-सहमत नया सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG) जलवायु परिवर्तन को कम करने और उससे अनुकूलन करने में विकासशील देशों की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है?